विचार बिन्दु

उत्साह से बढ़कर कोई दूसरा बल नहीं है, उत्साही मनुष्य के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है। –वाल्मीकि

राजस्थान में नगर नियोजन की स्थिति और नगर विकास प्रन्यासों की सार्थकता

राजस्थान प्रदेश के किस शहर की वसावट प्लान अनुरूप की हुई है और अभी भी कायम है? संभवतः रियासत कालीन जयपुरऔर जोधपुर ही ऐसे नगर हैं जहाँ अब भी पुराने शहर नियोजन की झलक मिल जाती है। कतिपय शहरों को छोड़कर भारत में स्वतंत्रता पूर्व शहरों की संख्या अंगुलिओं पर गिनने भर थी। अधिकाँश जनसंख्या तब ग्रामीण क्षेत्रों में ही निवास करती थी और उनका मुख्य पेशा खेत किसानी और उससे सम्बंधित अथवा निर्भर कुछ अन्य व्यवसाय जैसे लोहार, बढ़ई, कुम्हार, धोबी, काछी, जुलाहे आदि भी रहे, जो वहीं रहकर अपनी आजीविका कमा लेते थे। उद्योग चूंकि तब विकसित नहीं हुए थे इसलिए शहरों की जनसँख्या बड़ी सीमित थी।

स्वतंत्रता पश्चात् सभी गतिविधिओं के बढ़ते निर्माण, कल–कारख़ाने, ट्रांसपोर्ट, आदि ने जहाँ मानव केंद्रित क्रिया कलापों की वृद्धि में सहायता की, वही सडकों के आभाव में ग्रामीण जनता को शहरों की तरफ पलायन को प्रेरित भी किया। फलस्वरूप, गांव उजड़ते गए और शहर बढ़ते गए। शहरों के बढ़ते क्षेत्रों ने अन्तः प्रसाशन को उन्हें नियोजित करने को बाध्य किया ताकि आवागमन, बाजार व्यवस्था, बिजली पानी और भिन्न–भिन्न प्रकार की गाडिओं के पार्किंग की समुचित व्यवस्था की जा सके और उन्हें बनाये रखते हुए सभी क्रियाएं सुगमता से संचालित होती रहें।

आज़ादी के समय लगभग 80 प्रतिशत जनता गावों में रहती थी जो तत्पश्चात शनैः शनैः शहरों की तरफ आकर्षित होती गयी। आज एक आंकलन के अनुसार कुल आबादी का 60 प्रतिशत ही अब गावो में रह गया है। बढ़ते शहरी क्षेत्रों से व्यवसाय काफी बढ़ा और क्रय–विक्रय के लिए बाजार उपलब्धता भी बढ़ी। शहरों का विस्तार अभी रुका नहीं अपितु कुछ गाँव कस्बों में बदल गए और कस्बे लघु शहरों में। जिला मुख्यालय सुविधा संपन्न हो गए उनकी आबादी भी पांच लाख से ऊपर हो गई।

देश के पहले से ही बड़े शहर जैसे देहली, कोलकत्ता, चेन्नई, मुम्बई को छोड़ भी दें तो सभी प्रदेशों की राजधानियां यथा लखनऊ, देहरादून, शिमला, जयपुर, अहमदाबाद, नागपुर, भोपाल, पटना, रांची, रायपुर, हैदराबाद, बेंगलुरु शरीखे भी अब बड़े शहर बन चुके हैं। ऐसे में इन शहरों की बसावट, सड़कें, बिजली, पानी, बस अड्डा, रेल स्टेशन, मार्किट, ट्रांसपोर्ट पुलिस, अदालतें, सफाई और कचरा निस्तारण आदि फिर सबके लिए यथोचित आवास की व्यवस्था एक हिमालय सदृश्य कार्य था जिसे अंजाम देने के लिए म्युनिस्पैलिटी की जगह एक अपेक्षाकृत बड़े निकाय "शहरी विकास प्राधिकरण" की व्यवस्था की गयी।

इस प्राधिकरण अथवा निकाय से अपेक्षा थी सम्बंधित शहर में नियोजित विकास ही होगा। हर काम के लिए विस्तृत नियम होंगे और बिना उन नियमों की अनुपालना के कोई काम न तो शुरू होगा और न आगे बढ़ेगा। सभी अधिकारी और शहरी वाशिंदे इन नियमों के अधीन ही कार्य कर सकेंगे। देश का इसे दुर्भाग्य ही कहा जायगा क्योंकि संस्थान तो हम बड़े से बड़े करते चले गए लेकिन उनके स्वरुप और आकार में वृद्धि से उनके कार्य की गुणवत्ता सदैव बद से बदतर ही होती गई। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि सम्बंधित बड़े अफसर और कर्मचारी बड्डपन का भाव तो ओढ़ लिए, पर कार्यकुशलता में वृद्धि की अपेक्षा में ह्रास ही होता चला गया। ऐसी उदासीनता और कार्य के प्रति वेरुखि का मुख्य और केवल एक ही कारण रहा– जवाबदेही का न होना। इससे अनुशासन हीनता भी बढ़ी और बड़ों के प्रति अनादर और नकारात्मकता का भाव। वरिष्ठ अधिकारी ऐसे कर्तव्यहीन कर्मचारिओं के प्रति कड़ी कार्यवाही करते डरने लगे हैं। रही सही कसर कनिष्ठ से वरिष्ठ को रिश्वत में मिली रिश्वत के अंश से जटिल होती चली गई।

सड़क के दोनों तरफ नाली निर्माण भी होता है उसके भी मापदण्ड भौगोलिक दृष्टि से होने चाहिए यथा गहराई व् चौड़ाई और ढलान। तीस फ़ीट की सड़क पर दोनों तरफ चार चार फ़ीट लम्बे रैंप और तीन तीन फ़ीट छोड़ी नाली बनने पर लगभग 14 फ़ीट सड़क बचती है जिस पर बिजली के खम्भे, पानी की लाइन और पेड़ रोपण करना जरुरी है। इनके लिए भी विशेषज्ञ द्वारा मापदंड ही लागू किये जाय। वर्तमान में पेड़ लगाने की धुन ऐसी कि निवासी अपने अगल-बगल घने और बड़े वृक्ष लगाए हुए हैं जिससे वहां पेड़ की बजाय जंगल का सा दृश्य दीखता है।

टाउन प्लानिंग से नगर विकास प्रन्यास अथवा प्राधिकरण का सफ़र नाम बड़े और दर्शन छोटे की छवि का प्रदर्शन मात्र है। आज नगर विकास प्राधिकरण जहाँ भी हैं कतिपय को छोड़ सभी आवासीय भवन व् अन्य कोई निर्माण के वास्ते नक्शा अनुमोदन और निर्माण स्वीकृति तक ही सीमित हैं। उनके भी नियंत्रण और सतत निरीक्षण को कोई तंत्र व्यवस्था गठित नहीं की गई है फलस्वरूप नक्शा अनुमोदन पश्चात् निर्माण कर्ता अनुमोदित से परे अपनी मर्जी से परिवर्तित कर निर्माण करता है। इतना ही नहीं निर्माण के लिए नियम कभी सरकार बनाती तो कभी लोकल बोडीज़ और कभी प्राधिकरण। ऐसे में पूर्व के अनुमोदन स्वरुप बने भवन दसिओं साल बाद में बगल के ही खाली भूखंड पर बनने वाले निर्माण से पूर्व के पडोसी को झगड़ा–फसाद में उलझना पड़ता है, जिसका मुख्य कारण प्रदेश सरकार में बैठे अधिकारिओं द्वारा पूर्व की ही कोलोनिओं के नियमों में बदली करने से होता है और उसका दुष्परिणाम नवीन निर्माण करनेवाले को भुगतना पड़ता है।

नियम भी अपूर्ण, अधकचरे और अविवेकी बनते हैं उनमे कहीं भी स्पष्टता या पारदर्शिता व् विशेषग्यता की झलक नहीं मिलती। उदाहरण भूखंड के सामने वाली सड़क की चौड़ाई से फ्रेंटज, बैकस्पेस और साइड स्पेस का कोई मेल नहीं खाता। अमूमन किसी भी नगर में 25, 30, 40, 60 व् 100 फ़ीट चौड़ी और कतिपय सौ से अधिक चौड़ी सड़कें बनती हैं, ऐसे में यह आवश्यक है कि इन सडकों पर प्रस्तावित भवनों के सभी मानदंड भिन्न ही होने चाहिए। एक बार अनुमोदित मानदंड भविष्य में भले ही तीन दशक से अधिक खाली भूखंड पर निर्माण करे मानदंड पूर्व के ही लागू हों। फिर निर्माण के समय प्लिंथ की धरातल अथवा सामने की सड़क से ऊंचाई भी सभी भूखंडों के लिए सामान ही हो। और फ्रंट सड़क की तरफ खुलने वाले द्वार से रैंप की लम्बाई सड़क की चौड़ाई के अनुरूप 3 फ़ीट से 5 फ़ीट निर्धारित हो वर्तमान में कई मालिक अपेक्षा से अधिक ऊंची प्लिंथ रखते हैं जिससे अपनी सुभीता के लिए लम्बा रैंप लम्बा बनाकर आगे सड़क तक घेर सकें। विस्तृत व स्थिर नियमों के न रहते और निरीक्षण के अभाव में लोग निज स्वार्थवश अव्यवस्था को बढ़ाते चले जाते हैं। उदयपुर की कोलोनिओं में इस तरह के असंगत निर्माण भरे पड़े हैं।

सड़क के दोनों तरफ नाली निर्माण भी होता है उसके भी मापदण्ड भौगोलिक दृष्टि से होने चाहिए यथा गहराई व् चौड़ाई और ढलान। तीस फ़ीट की सड़क पर दोनों तरफ चार चार फ़ीट लम्बे रैंप और तीन तीन फ़ीट छोड़ी नाली बनने पर लगभग 14 फ़ीट सड़क बचती है जिस पर बिजली के खम्भे, पानी की लाइन और पेड़ रोपण करना जरुरी है। इनके लिए भी विशेषज्ञ द्वारा मापदंड ही लागू किये जाय। वर्तमान में पेड़ लगाने की धुन ऐसी कि निवासी अपने अगल–बगल घने और बड़े वृक्ष लगाए हुए हैं जिससे वहां पेड़ की बजाय जंगल का सा दृश्य दीखता है। जिसका सबसे प्रमुख नुकसान स्ट्रीट लाइटों की रौशनी सड़क पर न होकर आकाश और निकटवर्ती घर को ही प्रकाश देती है। वृक्षों की किस्म से कोई सरोकार नहीं, विवेकता से पेड़ों की किस्म का चयन, दूरी निर्धारित कर पेड़ रोप जायँ। स्ट्रीट लाइटों की सड़क से ऊंचाई भी ऐसी रखी जाय ताकि बिना किसी अवरोध सम्पूर्ण प्रकाश सड़क पर ही केंद्रित हो।

आखिर में सम्पूर्ण वर्षा और घर के पानी की निकासी समुचित ढलान देकर और नियमित सफाई व्यवस्था से निश्चित की जावे। दिन के उजाले में स्ट्रीट बल्ब अथवा ट्ययूब जलती नहीं छोड़नी चाहिए। उपरोक्त सुझावों के साथ ही एक सक्षम निगरानी तंत्र जिसकी जवाबदेहि भी हो, विकसित किया जाय जो यदा–कदा पूरे नगर में निरीक्षण करता रहे और प्रतिकूल स्तिथिओं में अवज्ञाकारी के प्रति बुलडोज़र कार्यवाही करवा सके। उपरोक्त कुछ मुख्य बातें नगर नियोजन सम्बंधित मेने पाठकों के समक्ष रखी हैं, आशा है कि सम्बंधित व्यक्ति, अधिकारी, संस्थाएं इन पर विचार कर यथोचित कदम उठाएंगे ताकि नगर नियोजन सार्थकता सिद्धि हो सके और नियोजन का प्रयोजन सफल भी दिखे।

–अतिथि सम्पादक,
प्रो. वीर बहादुर सिंह,
पूर्व कुलपति एवं खाद्य विज्ञ,
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

थार के रेगिस्तान के बीच खड़ा जैसलमेर किला आज भी अपने 99 बुर्जों और सदियों पुराने इतिहास की देता है गवाही

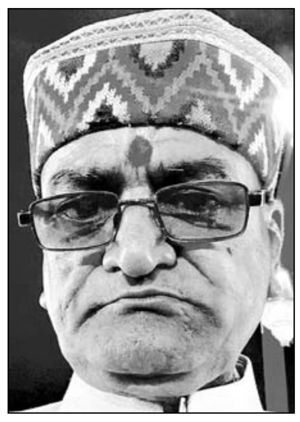

अचल दास डांगरा

राजस्थान के स्वर्ण नगरी जैसलमेर का सोनार किला अपनी अद्भुत स्थापत्य कला और 99 बुर्जों के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध है। इस दुर्ग का निर्माण वर्ष 1156 ईस्वी में भाटी शासक रावल जैसल ने त्रिकूट पहाड़ी पर करवाया था। पीले बलुआ पत्थरों से बना यह किला सूर्य की रोशनी में सोने की तरह चमकता है, इसी कारण इसे सोनार किला या गोल्डन फोर्ट भी कहा जाता है।

इतिहासकारों के अनुसार किले में कुल 99 बुर्ज हैं, जिनमें से 92 बुर्जों का निर्माण 1633 से 1647 के बीच सुरक्षा को और मजबूत करने के लिए कराया गया था। यह दुर्ग करीब 250 फीट ऊंचा है और 30 फीट ऊंची दीवारों से घिरा हुआ है।

यह किला केवल एक ऐतिहासिक धरोहर नहीं बल्कि आज भी जीवंत शहर की तरह आबाद है। किले के भीतर आज भी लोग रहते हैं, दुकानें चलती हैं, मंदिरों में पूजा होती है और पर्यटक राजस्थानी संस्कृति की झलक देखते हैं। यही वजह है कि जैसलमेर दुर्ग को दुनिया के सबसे पुराने लिविंग फोर्ट्स में गिना जाता है।

इतिहास में यह दुर्ग कई युद्धों और आक्रमणों का साक्षी रहा है। अलाउद्दीन खिलजी से लेकर मुगलों तक ने इस किले पर कब्जा करने की कोशिश की, लेकिन भाटी राजपूतों की वीरता ने इसे लंबे समय तक सुरक्षित रखा। व्यापारिक दृष्टि से भी यह दुर्ग प्राचीन सिल्क रूट का महत्वपूर्ण केंद्र माना जाता था।

वर्ष 2013 में यूनेस्को ने जैसलमेर फोर्ट को राजस्थान के हिल फोर्ट्स समूह में विश्व धरोहर घोषित किया। आज यह दुर्ग राजस्थान पर्यटन की पहचान बन चुका है और हर साल लाखों पर्यटक यहां पहुंचते हैं।

–अचल दास डांगरा,
वरिष्ठ पत्रकार

भीलवाड़ा के शिवनगर में लोगों को कई माह से नहीं मिल रहा पानी

मूलभूत सुविधाओं की कमी और पानी की बूंद-बूंद को तरस रहे क्षेत्रवासियों ने मटकियां फोड़कर प्रदर्शन किया

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के 100 फीट रोड स्थित किरण मार्केट के सामने बसे शिवनगर क्षेत्र में पिछले कई महीनों से पेयजल संकट गहराया हुआ है। मूलभूत सुविधाओं की कमी और पानी की बूंद–बूंद को तरस रहे क्षेत्रवासियों के सब्र का बांध आखिरकार शुक्रवार को टूट गया। प्रशासन की बेरुखी से नाराज शिवनगर के बाशिंदों ने 100 फीट मुख्य मार्ग पर बीच सड़क टेंपो लगाकर रास्ता जाम कर दिया और मटकियां फोड़कर उग्र प्रदर्शन किया। इस दौरान महिलाओं और स्थानीय लोगों ने "पानी दो... पानी दो" के नारे लगाते हुए जलदाय विभाग और प्रशासनिक अधिकारियों के खिलाफ जमकर आक्रोश जताया।

- **प्रदर्शनकारियों ने जलदाय विभाग के अधिकारियों पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि पिछले 6 महीने से अधिक समय से क्षेत्र में पानी की सप्लाई पूरी तरह ठप पड़ी है**

प्रदर्शनकारियों ने जलदाय विभाग के अधिकारियों पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि पिछले 6 महीने से अधिक समय से क्षेत्र में पानी की सप्लाई पूरी तरह ठप पड़ी है। नलों से पानी की जगह सिर्फ हवा निकल रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि जलदाय विभाग की लापरवाही का आलम यह है कि पानी की एक बूंद नहीं मिल रही, लेकिन हर महीने नलों के बिल नियमित रूप से भेजे जा रहे हैं। क्षेत्रवासी ईमानदारी से पानी के बिल जमा करवा रहे हैं, इसके बावजूद उन्हें पीने के पानी के लिए निजी टैंकरों पर निर्भर होना पड़ रहा है या दूर–दराज से पानी ढोना पड़ रहा है। स्थानीय निवासियों के अनुसार, इस समस्या को लेकर वे कई बार स्थानीय पार्षद से लेकर जलदाय विभाग के उच्चाधिकारियों तक लिखित और मौखिक शिकायतें कर चुके हैं। उच्च अधिकारियों द्वारा मामले में निर्देश दिए जाने के बावजूद भी जमीनी स्तर पर जिम्मेदार कनिष्ठ अधिकारियों ने कोई कार्रवाई नहीं की। हर बार अधिकारियों की ओर से सिर्फ कोरा आश्वासन ही थमा दिया जाता है, जिससे समस्या जस की तस बनी हुई है। चक्काजाम और मटकी फोड़ प्रदर्शन कर रहे शिवनगर वासियों ने प्रशासन को चेतावनी दी है कि यह तो सिर्फ एक ट्रेलर था, अगर जल्द ही क्षेत्र में नियमित पेयजल आपूर्ति बहाल नहीं की गई और मूलभूत सुविधाएं नहीं सुधारी गईं, तो वे उग्र आंदोलन और अनिश्चितकालीन चक्काजाम करने को मजबूर होंगे, जिसकी समस्त जिम्मेदारी जिला प्रशासन और जलदाय विभाग की होगी।

बाल विवाह रुकवाया

डूंगरपुर, (निसं)। कुआ थाना क्षेत्र की ग्राम पंचायत डूंगर सारण में एक बालक का बाल विवाह कराए जाने की सूचना बाल अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 को प्राप्त हुई। सूचना में बताया गया कि बालक की उम्र करीब 18 वर्ष है और उसका विवाह करवाया जा रहा है।

सहायक निदेशक, बाल अधिकारिता विभाग डॉ. कल्पित शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि चाइल्ड हेल्पलाइन समन्वयक मेहुल शर्मा ने तुरंत इसकी सूचना जिला प्रशासन एवं कुआ पुलिस थाना को दी। इसके बाद तहसील चिखली, कुआ पुलिस तथा चाइल्ड हेल्पलाइन की संयुक्त टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच की। जांच के दौरान बालक के दस्तावेजों का सत्यापन किया गया, जिसमें उसकी उम्र 20 वर्ष 2 माह पाई गई। इसके बावजूद टीम ने मौके पर चल रही विवाह प्रक्रिया को रुकवाया तथा बालक के माता–पिता को भविष्य में बाल विवाह नहीं कराने के लिए तहसील चिखली द्वारा पाबंद किया। बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष भावेश जैन ने बालक को शिक्षा से जोडने की जानकारी दी।

अजमेर में काजीपुरा लैपर्ड सफारी का विधानसभा अध्यक्ष देवनानी ने निरीक्षण किया

अजमेर, (निसं)। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने निर्माणाधीन काजीपुरा लैपर्ड सफारी का निरीक्षण कर विभिन्न विकास कार्यों की प्रगति का जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों को निर्माण कार्यों में तेजी लाकर इस वर्ष के अंत तक सफारी को आमजन के लिए शुरू करने के निर्देश दिए। देवनानी ने सफारी परिसर में विकसित किए जा रहे टिकट काउंटर, मुख्य द्वार, प्रशासनिक भवन तथा अन्य निर्माणाधीन कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने चौकियों और निगरानी टावरों का भी अवलोकन कर सुरक्षा व्यवस्थाओं की जानकारी ली। सफारी मार्ग का निरीक्षण करते हुए इसे पर्यटकों के अनुकूल और सुव्यवस्थित बनाने के निर्देश दिए।

अधिकारियों ने बताया कि लगभग साढ़े चार हेक्टेयर क्षेत्र में शाकाहारी वन्यजीव संरक्षण क्षेत्र विकसित किया जा रहा है, जहां वन्यजीवों को प्राकृतिक वातावरण में अनुकूल बनाया जाएगा। बाद में उन्हें जंगल क्षेत्र में छोड़ा जाएगा। यहां घेराबंदी, आश्रय स्थल और जलकुंड का निर्माण भी किया जा रहा है। देवनानी ने मुख्य द्वार, टिकट काउंटर और प्रशासनिक भवन सहित विभिन्न स्थलों पर राजस्थान की वन्य धरोहर को दर्शाने वाली आकर्षक चित्रकारी करवाने के निर्देश दिए।

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने निर्माणाधीन काजीपुरा लैपर्ड सफारी का निरीक्षण कर विभिन्न विकास कार्यों की प्रगति का जायजा लिया।

उन्होंने कहा कि इससे सफारी का सौंदर्य बढ़ेगा और पर्यटकों में वन्यजीवन के प्रति जागरूकता भी बढ़ेगी। उन्होंने सफारी क्षेत्र में बनाई जा रही चारदीवारी की गुणवत्ता की जांच कर अतिक्रमण रोकने के निर्देश दिए। साथ ही वर्षा जल संरक्षण के लिए छोटे बांधों में जल संचय सुनिश्चित करने और बड़े स्तर पर पौधारोपण कराने को कहा। देवनानी ने कहा कि भैरव घाटी प्राकृतिक रूप से अत्यंत सुंदर क्षेत्र है और यहां विकसित हो रही लैपर्ड सफारी अजमेर को प्राकृतिक पर्यटन के क्षेत्र में नई पहचान दिलाएगी। उन्होंने भैरव मंदिर क्षेत्र के विहंगम दृश्य स्थल को दर्शनीय बिंदु के रूप में विकसित करने के निर्देश दिए। इसके अलावा घाटी क्षेत्र में सूर्यास्त स्थल, सेल्फी प्वाइंट तथा अन्य पर्यटन स्थलों को प्राकृतिक स्वरूप में विकसित करने को कहा। सूरजपोल स्थित सम्राट पृथ्वीराज चौहान के अस्तबल क्षेत्र को भी दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित करने के निर्देश दिए। पर्यटकों के लिए बैठने और अल्पाहार की व्यवस्था विकसित करने के सुझाव भी दिए गए। इस अवसर पर सहायक वन संरक्षक विभा चौधरी सहित विभागीय अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।

- **देवनानी ने अधिकारियों को निर्माण कार्यों में तेजी लाकर इस वर्ष के अंत तक लैपर्ड सफारी को आमजन के लिए शुरू करने के निर्देश दिए**
- **वासुदेव देवनानी ने भैरव मंदिर क्षेत्र के विहंगम दृश्य स्थल को दर्शनीय बिंदु के रूप में विकसित करने के निर्देश दिए**

जोधपुर : भीषण गर्मी में भी भोगिशैल परिक्रमा यात्रा में उमड़ रहे श्रद्धालु

जोधपुर, (कासं)। हिंदू सेवा मंडल की ओर से निकाली जा रही भोगिशैल परिक्रमा यात्रा में श्रद्धा का ज्वार उमड़ पड़ा है। भीषण गर्मी और तेज धूप के बावजूद श्रद्धालु कठिन पथरीले पहाड़ी रास्तों पर लगातार आगे बढ़ रहे हैं। आज पांचवें दिन भोगिशैल परिक्रमा यात्रा अपने अगले पड़ाव बेरीगंगा तीर्थ पहुंची।

हिंदू सेवा मंडल द्वारा निकाली जा रही भोगिशैल परिक्रमा यात्रा ने आज सुबह पांच बजे वैजनाथ महादेव मंदिर से प्रस्थान किया। इसके बाद यह यात्रा वैजनाथ पगडण्डी, मंडलनाथ महादेव, कुण्डली माता, बीएसएफ, जोगी तीर्थ, दईजर माता मंदिर होते हुए बेरीगंगा पहुंची। दिन एवं रात्रि विश्राम बेरीगंगा क्षेत्र में किया गया है। भोगिशैल परिक्रमा के पांचवे दिन पूर्व महारानी हेमलता राज्ये ने सुबह चार बजे से 8.15 बजे तक करीब दस किलोमीटर घोर अंधेरे से उजाले तक पथरीले, पहाड़ी व तंग रास्ते पर पैदल चलकर परिक्रमा करते हुए अनेक मंदिरों में दर्शन किए व मारवाड़ की खुशहाली की प्रार्थना की। बेरी गंगा पहुंचने से पहले रास्ते में राज्यसभा सांसद राजेंद्र गहलोत ने हेमलता राज्ये की अगवानी की। अ. भा. मा. म. संगठन के तत्वावधान में माताजी भक्ति सागर ग्रुप ने भोगिशैल परिक्रमा पदयात्रा में शामिल जातरुओं के लिए सेवा कार्य किए। अध्यक्ष मुन्नी भाटी ने बताया कि प्रमुख संयोजक संतोष राठी के नेतृत्व में 31 महिलाओं का समूह बस से एक दिवसीय परिक्रमा यात्रा पर निकला। महिलाओं ने रातानाडा स्थित गजानंद मंदिर एवं प्रगट संतोषी माता मंदिर के दर्शन किए। इसके बाद बेरीगंगा में स्नान कर बैजनाथ, बड़ली भैरुजी के दर्शन करते हुए चौपासनी मार्ग से जबरेश्वर महादेव मंदिर पहुंचे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 30 मई, 2026

प्रथम ज्येष्ठ मास (अधिक), शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2083, विशाखा नक्षत्र दिन 1:20 तक, शिव योग रविवार प्रातः 5:25 तक, वणिज करण दिन 11:58 तक, चन्द्रमा प्रातः 6:39 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–वृष, चन्द्रमा–तुला, मंगल–मेष, बुध–मिथुन, गुरू–मिथुन, शुक्र–मिथुन, शनि–तुला, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज रवियोग दिन 1:20 तक है। भद्रा दिन 11:58 से रात्रि 1:06 तक है। आज चान्द पूर्णिमा व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:19 से 9:01 तक, चर 12:24 से 2:06 तक, लाभ अमृत 2:06 से 5:29 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:11

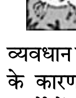

मेष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

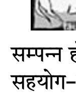

वृष

परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

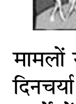

मिथुन

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

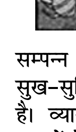

कर्क

परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। घर–परिवार में सुख–सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

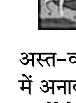

सिंह

घर–परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। घर–परिवार में अनावश्यक धन खर्च होगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

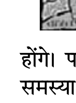

कन्या

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

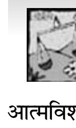

तुला

मानसिक तनाव दूर होने लगेगा। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

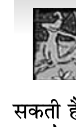

धनु

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मकर

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

मीन

व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।